वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मई 2023

- हम अनाधिकारी कैसे बन जाते हैं?
- शिष्टाचार
- भगवान देवात्मा सदा प्रगतिशील हैं।
- क्या आम इन्सानियत किसी सच्चे धर्म की तलाश में है?
- आपकी ज्योति में हमें अपने अपराध दिखाई देते हैं।
- भगवान देवात्मा की शिक्षा हर सम्बन्ध में अद्वितीय है।
- हमारी बिरादरी यही है।

देव वाणी के नोट से

बनाने और ढ़ाने दोनों बातों में एक ही नियम काम करता है। दीवार बनाने में जैसे एक -एक ईंट रखनी पड़ती है, एक के अनन्तर दूसरी और दूसरी के अनन्तर तीसरे रखने से दीवार बन जाती है, वैसे ही ढ़ाने में इस अमल की आवश्यकता है। पहले एक ईंट को निकालो, फिर दूसरी फिर तीसरी इसी तरह सारी दीवार बिल्कुल ढ़ह जावेगी। यही नियम अपने आत्मा में से अहं अनुराग आदि नीच शक्तियों को दमन करने और नाना प्रकार की उच्च शक्तियों को पैदा करने का है। प्रतिदिन की जिंदगी में जब ही किसी के संबंध में कोई अपमानकारी गति हो तब ही हाथ जोड़ो, माफी मांगो, उस हानि का जहां तक संभव हो, परिशोध करो, तब अवश्य यह अहं का अधिकार घटता जाएगा। जितना अधिक ऐसा अमल कर सकोगी, उतना ही इस नीच अनुराग के रद्दे घटते जाएंगे। फिर जब देखो कि तुम्हारे अहं पर उचित चोट लगने से तुम्हें दुःख नहीं होता, तब समझो कि यह नष्ट हो गया है। परन्तु जब तक ऐसी अवस्था न आवे, इस के रद्दों को बराबर धैर्य और हिम्मत के साथ निकालते जाने की आवश्यकता है। फर्ज़ करो कि यदि तुमने फिरोजपुर से लाहौर आना हो और तुम कसूर आ कर ही कहो कि अब तो मुझसे आगे जाया नहीं जाता, तो तुम लाहौर न पहुंच सकोगी। इसी प्रकार से एक बार माफी मांग कर यदि तुम यह कहो कि अब तो मुझसे बार बार माफी मांगी नहीं जाती, रोज रोज मुझ से हाथ नहीं जोड़े जाते रोज-रोज मुझ से नीचा नहीं हुआ जाता, तो अहं नष्ट न होगा। जैसे हम अपनी शारीरिक रक्षा और पालना के लिए प्रतिदिन खाना खाते हैं, दिन में दो बार चूल्हा फूंकते हैं और इस के भिन्न प्रतिदिन कई अंगों के द्वारा गंद निकालने का काम भी करते हैं, ऐसा क्यों करते है? इसलिए कि हम जानते हैं कि ऐसा करने के बिना हम जिन्दा नहीं रह सकते। वैसे ही हमें अपने आत्मिक जीवन की रक्षा, शुद्धि और उन्नति के लिए भी प्रतिदिन उचित आहार पाने और अपनी मैल को धोने की नितान्त आवश्यकता है। हां यदि तुमने जिंदगी का सफर तह करना है तो तुम्हें प्रतिदिन बनाने और ढ़ाने के असूल को सामने रखना चाहिए और एक को पैदा करने और दूसरे को मिटाने के लिए यत्न करना चाहिए।

दुनिया में धर्म साधन के नाम से पूजा पाठ आदि तो बहुत जारी हैं, परन्तु उन से शुभ फल कुछ नहीं निकलता। अब यह तुम्हारा फर्ज़ है कि तुम्हारे साधन दुनिया के लोगों के पूजा पाठ की न्याई न हों तुम्हारे साधनों की विशेषता होनी चाहिए, वरना यदि उनकी न्याई तुम्हारे साधन भी तुम्हारे जीवन में कोई उच्च परिवर्तन लाने का काम न करें तो वह सब निष्फल हैं। ऐसे साधन किसी काम के नहीं।

यदि कहलाने वाले किसी तीर्थ स्थान पर जाने या गंगा में डुबकी लगाने से पाप चले जाते, वा कोई हानिकारक शक्ति नष्ट हो जाती तो हम बड़ी खुशी से तुम्हें अपने किराया पर गंगा भेज देते और कहते कि एक दफा छोड़ तीन दफा डुबकी लगा आओ, परन्तु शोक! वहां डुबकी लगाने से न तो कोई नीच शक्ति नष्ट होती है और न ही कोई उच्च शक्ति पैदा होती है। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए अपने निज के सच्चे धर्म साधनों की आवश्यकता है और उस सारे कोर्स में से गुज़रने की आवश्यकता है कि जिस की हम शिक्षा देते हैं।

धर्म जीवन

खण्ड 34 अंक 5
मई 2023
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

हम अनाधिकारी कैसे बन जाते हैं?

एक बार भगवान देवात्मा के श्रद्धावान सेवक भाई अतर सिंह जी तहसीलदार सोलन सत्संग पर गए हुए थे। जब वह वापिस जाने लगे तो वह भगवान देवात्मा को प्रणाम करने के लिए गए। उन्होंने भगवान के श्री चरणों में सिर रखकर प्रणाम किया। जब वो रेलवे स्टेशन पर जा रहे थे तो उनके साथ उन्हें छोड़ने के लिए सरदार गुरमुख सिंह जी भी थे। रास्ते में भाई अतर सिंह जी ने सरदार गुरमुख सिंह जी से कहा कि श्रीमान जी भगवान के श्री चरणों में सिर रखकर प्रणाम करके मुझे बहुत आनन्द आया। सरदार गुरुमुख सिंह जी ने भाई अतर सिंह जी से कहा भाई जी आपके भाव तो बहुत अच्छे हैं परन्तु मैं कभी भी पूजनीय भगवान के श्री चरणों में अपना सिर नहीं रखता, मैं तो उनके चरणों से कुछ पीछे जमीन पर ही अपना सिर रख देता हूँ। और यह महसूस करता हूँ कि मेरा सिर इस काबिल नहीं कि देवात्मा के श्री चरणों को छू सके। वाह! कैसे सुन्दर भाव सरदार गुरमुख सिंह जी के!!

सरदार गुरमुख सिंह जी भगवान के कर्मचारी थे, वह बहुत बड़े वकील थे। फिरोज़पुर शहर में उनका बहुत बड़ा नाम और सम्मान था। वो कहा करते थे कि भगवान ओर उनके मिशन के लिए अगर मुझे फिरोज़पुर शहर में सिर पर रड़के रखकर बेचने का हुक्म भगवान दें तो भी मैं खुशी खुशी यह कर सकता हूँ। परन्तु अफसोस ऐसे भाव रखने वाले जन भी भगवान देवात्मा से अनाधिकारी बनकर कट गए। वह खुद तो भगवान से कटे ही और अपने पारिवारिक जनों को भी भगवान से काटने का कारण साबित हुए। उनकी धर्म पत्नी कि जो भगवान की महिमा के गीत गाती थी और अन्य स्त्रियों में भगवान का संदेश पहुँचाती थी, वो भी कट गई। उनके बहुत से संबंधी देवात्मा से कट कर अफ़ीम और नशों का शिकार हो गए।

भाई मंगल देव जी जिनके विषय में यह मशहूर था कि 'मंगल पावे संगल' अर्थात् देवात्मा के देव प्रभावों का उनके पास ऐसा जादू था कि वो अधिकारी आत्माओं को खींच लेते थे। भाई मोहन देव जी भी उन्हीं के द्वारा भगवान् के श्री चरणों में आए थे। भाई मंगल देव जी को काम करते देख भगवान ने उनका सम्मान किया था उनके पांव धोकर उनको अपने हाथों से खाना खिलाया था, उन्हीं भाई मंगल देव जी के अन्दर यह भाव काम करने लगा कि यह सब काम मैं कर रहा हूँ। देवात्मा बड़े पेड़ और मैं छोटा पेड़ हूँ।

बड़े पेड़ के नीचे छोटा पेड़ नहीं पनप सकता और वह देवात्मा से अलग होकर काम करने लगे। सालों बाद उनके पास कुछ कर्मचारी मिलने गए, उन्होंने कहा देवात्मा से अलग होकर मैंने बड़े पापड़ बेले पर कुछ हाथ न आया। वो बहुत बुरी अवस्था में पहुँच गए। समाज से निकलकर बड़े 2 कर्मचारियों ने स्वतन्त्र रूप से काम करने का यत्न किया, परन्तु सब पतित हो गए, जिसका योग सचमुच देवात्मा से हो और वह उनके प्रभाव पाता हो, अहं से युद्ध कर सकता हो केवल वही कोई नया संगठन शुरू कर सकता है।

सेठ नानू मल जी जिन्होंने एक लाख रुपया उस समय आज से लगभग 110 सौ वर्ष पहले देवात्मा के मिशन में दिया था उनके भाव हम नीचे दे रहे है वो लिखते हैं :-

हे देव! आपने जो मुझे जीवन ज्योति का दान दिया है और नीच गतियों से मोक्ष और उच्च भावों के विकास के लिए जो बल मुझे दिया है, उसको पाकर धन्य-धन्य हूँ। मेरे भीतर जो आत्महित अभिलाषा जागी है, मुझे अपना असल मकसद देखने का और उसको पाने का जो अधिकार आप की कृपा से मिला है, उसको पाकर मैं अपने आपको महा सौभाग्यवान समझता हूँ। मेरे परिवार में और मेरे अनेक प्रकार के और रिश्तों में जो मुझे ठीक तौर पर चलने का जीवन पथ आपने दिखाया है, उस पर चल कर जो मुझे सुख और शान्ति मिली है, उसको सम्भोग करके मैं अपने आप को बहुत भाग्यवान समझता हूँ। मैं यह बोध करता हूँ कि हफ्त अकलीम का बादशाह भी मुझ जैसा खुशनसीब न होगा।

हे भगवन! मैं चाहता हूँ कि मैं पूर्णतया अपने आपको आपके आगे भेंट करूँ और इसलिए मैंने यह फैसला कर लिया है कि मैं अपना कुल काम निपटा कर अपनी कुल जायदाद और कुल सम्पत्ति के साथ आप के पास पहुँच जाऊं और फिर आगे के लिए आप जिस तौर पर फरमाएं, मैं उस तौर पर चलूँ जो काम आप फरमाएं, वह करूं।

वो सेठ नानू मल भी जिनके यह भाव थे, अनाधिकारी बन गए और कहने लगे, वो बड़े देवात्मा है हम छोटे देवात्मा हैं। उपदेश उनका चलता है और पैसा हमारा चलता है। सेठ जी देवात्मा से अलग होकर मुंबई चले गए। वहाँ देव समाज के एक कर्मचारी उनसे मिले, सेठ जी के हाथ में बीड़ी थी, वो बीड़ी पी रहे थे।

"सुरक्षित हूँ मैं हे भगवन, तुम्हारे हाथ में आकर" गाने वाले, पुस्तकों और देव समाज के अखबारों में लिखने वाले, बड़े बड़े भाषण देने वाले और सैकड़ों हजारों की भीड़ को आकर्षित करने वाले पंडित देव रतन जी देवात्मा से कटकर अनाधिकारी बन गए।

उपरोक्त बड़े बड़े जन अगर भगवान देवात्मा की वर्तमानता में भी अनाधिकारी बनकर कट सकते हैं तो हम अपना अनुमान लगा सकते हैं कि हम किस अवस्था में पहुँच सकते हैं। हम दुनियादारी के वातावरण में रहते हैं। हमें देवात्मा की याद भी सारे दिन में नहीं आती। उनका ख्याल भी दुनियावी चक्करों में हमारे ध्यान में नहीं आता तो साधन करना, उनकी पुस्तकें पढ़ना, संगत की भूख, मोक्ष और विकास के साधन, देवात्मा का संबंध तो हमारे लिए सपना ही है। नेचर में उसके नियम काम करते हैं, अगर हमारे जीवन में देवात्मा के निकट होने के नियम प्रतिदिन पूरे नहीं होते तो हमारे उनसे दूर होने

और अन- अधिकारी बनने के नियम जरूर पूरे हो रहे हैं।

अनाधिकारी कौन होता है, इसका उत्तर भगवान ने सिद्धांत दर्पण पुस्तक में दिया है। हम उसका संक्षिप्त वर्णन नीचे दर्ज करते हैं।

1. जो अहं अनुरागी बनकर सिर्फ अपनी प्रशंसा के भिन्न किसी की सच्ची प्रशंसा सुनकर कष्ट बोध करते हों, अपनी बुराई और पाप के विरूद्ध किसी से सुनकर घृणा से भर जाते हों और उसे अपना शत्रु देखते हों।

2. जो दूसरों की सच्ची वा मिथ्या हीनता वा पाप वा अपराध के विषय में सुनने के लालसी रहते हैं। उन्हें अपनी हीनता वा नीचता दिखाई नहीं देती अपनी हीनता के विषय में अपने हितकर्ता से सुनकर उसे उल्टे रूप में देखते हों।

3. जो अपने नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के संबंध में जानने के आकांक्षी न हो और इस संबंध में किसी सच्चे शिक्षक वा गुरु से ज्योति पाने के नियमित कोई आकांक्षा न रखते हों और अपने आपको अपना गुरू मानते हों।

4. जो अपने नीच अनुरागों और घृणाओं के सुखों को पाकर उनके दास बन गए हों और उन्हें अपना सुख दाता जानकर उनकी तृप्ति को अपना सच्चा लाभ देखते हों।

ऐसे आत्मा देवात्मा के देव प्रभावों को पाने के अनाधिकारी होते हैं। उनमें शुभ परिवर्तन नही आ सकता। अगर कभी पहले वो देवात्मा के देव प्रभाव पाने के योग्य थे तो वो अपनी योग्यता को भी नष्ट कर देते हैं।

गौतम गोनियाना

शिष्टाचार

(भगवान देवात्मा रचित पुस्तक शिष्टाचार से)

० जहां तक सम्भव हो अप्रसन्न चित्त और व्यर्थ चिन्ताओं वा आशंकाओं से रहित रहने का अभ्यास करो।

० उच्च आत्माओं की सदा संगत करो और नीच वा दुष्ट जनों की कभी संगत न करो।

० अपने पारिवारिक वा अन्य समीपी जनों के छोटे छोटे दोषों को क्षमा करने और अपने अच्छे बर्तावों से, जहां तक सम्भव हो, उन पर अच्छे प्रभावों के डालने का अभ्यास करो।

० किसी विशेष कारण के भिन्न प्रतिदिन नियत समय में स्नान और भोजन करने का अभ्यास करो और जहां तक सम्भव हो वही वस्तुएं खाओ और पीयो, कि जो तुम्हारे लिए स्वास्थ्यकर हों। साधारणत: दिन में तीन बार खाना यथेष्ट हो सकता है।

० मैले कपड़े मत पहनो, और अपनी अवस्था के अनुसार उनके बदलने के लिए दिन नियत करो, और जहां तक सम्भव हो, उन्हें नियत वा उसके लगभग समय वा दिन में बदलते रहो।

० किसी विशेष कारण वा उनकी अनुमति के भिन्न जहाँ तक हो, बड़ों के पास उनकी दृष्टि की पहुँच तक किसी चारपाई वा ऊँचे स्थान में बैठना वा सोना नहीं चाहिए।

० किसी बड़े के सम्मुख बहुत वेग से खंखारना अथवा खंखार कर योंही थूकना नहीं चाहिए।

० विशेष विशेष माननीय जन जहाँ तक किसी स्थान में दिखाई देते हों, वहाँ तक उनके आने जाने वा खड़े होने के समय, बिना उनकी किसी विशेष आज्ञा के आप बैठे वा लेटे रहना नहीं चाहिए। किन्तु यदि तुम उस समय बैठे वा लेटे

हुए हो, तो शारीरिक स्वास्थ्य और बल रखने पर उन्हें देखने के साथ ही (चाहे वह तुम से दूर भी हों) तुम्हें खड़े हो जाना चाहिए।

० जब कोई बड़ा जन तुम्हारे पास आवे, तब तुम्हें खुद खड़े हो जाना चाहिए और उनके बैठने के लिए कोई बैठने की वस्तु अर्पण करने और उनके बैठ जाने के अनन्तर फिर आप बैठना चाहिए।

० बड़ों के पास जाकर इधर उधर नहीं देखना चाहिए किन्तु जहाँ तक सम्भव हो, उन्हीं की ओर देखना चाहिए और उनकी हर एक बात को बहुत ध्यान देकर सुनना चाहिए।

० जो वस्तुएं सुगमता पूर्वक मोल लेकर अपने पास रखी जा सकती हों, उन्हें जहां तक हो, औरों से माँग कर नहीं बरतना चाहिए।

० जहां तक सम्भव हो, उचित अनुमति के बिना किसी की किसी वस्तु का कोई प्रयोग नहीं करना चाहिए।

० जहां तक सम्भव हो, कलम, दवात, कागज, पेन्सिल, छुरी, कैंची, सुई, धागा, दियासलाई, लोटा, गिलास, आदि प्रति दिन के प्रयोग की वस्तुओं के किसी और से मांग कर नहीं प्रयोग करना चाहिए।

० किसी से कोई वस्तु माँग कर उसे उचित वा नियत समय में लौटा देने में कभी वृथा देरी न करनी चाहिए।

० जब कभी अपने किसी बड़े को बुलाना हो, तब उसका नाम लेकर उसे पुकारना नहीं चाहिए, अर्थात् अपने पिता, माता, दादा, दादी, नाना, नानी, मामा, बुआ, मौसी, बड़े भाई और बड़ी बहन आदि को उनके नाम से नहीं पुकारना चाहिए, किन्तु पिता जी, माता जी, दादा जी, दादी जी, मामा जी, बुआ जी, बड़े भाई जी, बहिन जी आदि कहकर सम्बोधन करना वा पुकारना चाहिए। इसके भिन्न उन्हें कभी एक वचन के द्वारा अर्थात् तू कहकर नहीं सम्बोधन करना चाहिए।

० तुम्हारे बड़े जिस किसी जन को सम्मान प्रदर्शन करते हों, अथवा जो जन उनके सम्मान पात्र समझे जाते हों, उनको भी उनका केवल नाम लेकर नहीं बुलाना चाहिए।

० अपने दादा दादी और माता पिता को विशेषकर, और घर के और बड़ों को भी, प्रतिदिन सोकर उठने के अनन्तर, प्रथम मिलने पर हाथ जोड़कर और सिर निवाकर प्रणाम करना चाहिए, और यथा अवसर उनकी कुशल पूछनी चाहिए।

० माता, पिता, पुत्र, कन्या, भाई, भगिनी, पति, पत्नी आदि विशेष विशेष जनों के भिन्न, जहाँ तक सम्भव हो, किसी अन्य स्त्री और पुरुष को एकान्त में बैठकर कोई बातचीत न करनी चाहिए।

० किसी रास्ते पर चलते समय वा किसी जलसे आदि के विशेष अवसर पर इक्ट्ठे होने पर पुरुषों और स्त्रियों को जहाँ तक सम्भव हो एक दूसरे को छूकर नहीं गुजरना चाहिए।

० किसी रोगी के समीप बैठकर, जहाँ तक सम्भव हो उसके लिए आशा जनक और हितकर, परन्तु सत्य के अनुकूल बातचीत करनी चाहिए।

० किसी रोगी के समीप, अपने कथन वा संकेत आदि के द्वारा कोई बात ऐसी न करनी चाहिए, कि जिससे उसके भीतर अपने रोग के सम्बन्ध में किसी प्रकार की निराशा उत्पन्न हो।

० किसी रोगी के समीप, किसी विशेष आवश्यकता के बिना ऐसे विषय में बातचीत न करनी चाहिए कि जो उसके लिए अप्रिय वा कष्टकर हो।

० किसी रोगी के पास अकारण बहुत देर तक न बैठना चाहिए।

भगवान देवात्मा सदा प्रगतिशील हैं।

विजेता सदा प्रगतिशील होते हैं। यह पक्ष मैंने भगवान में उच्चतम रूप में देखा है। उनके लिए पूर्ण विराम कभी नहीं है! राजनीति में सिकन्दर रोता था कि जीतने के लिये अब और दुनियां नहीं है। भगवान का रोना इसलिए होता है, कि उन की देव शक्तियों ने जो एक नई दुनिया खोल दी है उनमें विजय प्राप्त करने के लिए अभी बहुत कुछ शेष है और उसके लिए न उनके पास समय है, न सहायक हैं और न शरीर में इतनी शक्ति रह गई है। अभी कुछ दिन पहले उनके सेक्रेट्री श्रीमान बख़्शी जी ने लिखा है कि जब अत्याधिक काम करने के कारण भगवान को स्नायु प्रणाली चूर चूर हो जाती है तो वे उस शारीरिक कष्ट के लिए नहीं रोते – यद्यपि होता भी है – वे इसलिए रोते हैं कि जो अदभूत सत्य उन्होंने खोजे है, उन्हें मानवता के उच्चतम हित के लिये अभी लिपिबद्ध नहीं कर पाए हैं। भगवान अपनी खोज में अथक हैं। उनकी आयु 78 वर्ष हो चुकी है। इस आयु में हम किसी व्यवसाय अथवा अन्य क्षेत्र में भी मनुष्यों को काम करता नहीं देखते। इस 78 वर्ष की आयु में किसी को घण्टों लगातार अध्यात्मिक क्षेत्र में गहनतम खोज और छानबीन करते देखने की आशा करना असम्भव है, जबकि इस कार्य में न कोई और सहायक हो, न मार्ग दर्शक हो, न कोई मित्र हो। परन्तु हम प्रतिदिन यही कुछ भगवान के जीवन में देख रहे हैं। पूजनीय देव शास्त्र एक बार प्रकाशित हो चुका था। अभी उसकी बिक्री पूरी भी नहीं हुई थी कि उसका दूसरा संस्करण बहुत कुछ परिवर्तन के साथ प्रकाशित हो गया। हम सोचते थे कि पूजनीय भगवान जो कुछ श्रेष्टतम कर सकते थे वह उन्होंने कर दिया और इस परम पावन ग्रंथ में प्रदान किए गए अनुपम मार्ग दर्शन के लिए भगवान के प्रति कृतज्ञता अनुभव करते थे। परन्तु मैं एक दिन यह सुनकर चकित हो गया कि भगवान देवात्मा ने दूसरे संस्करण में भी संशोधन करने का विचार किया है। इस संशोधन के हेतु भगवान को नई पुस्तक श्रृंखला लिखनी पड़ी। दो उनमें से प्रकाशित हो चुकी हैं। यह कुछ पता नहीं कि अभी और कितने भाग लिखने होंगे। इस अद्वितीय ग्रंथ के अतिरिक्त आज भी हम उनके द्वारा आत्मा, सत्य धर्म, सत्य सिद्धान्त सम्बन्धी असाधारण पैम्फलेट और पुस्तकें प्राप्त करते हैं जो एक दिन स्वर्ण अक्षरों में सुरक्षित होंगी। (अफसोस अभी तक भगवान द्वारा रचित 300 से अधिक पुस्तकें सुरक्षित नहीं हो सकीं, और बहुत सारी पुस्तकों का अभी कुछ पता भी नहीं – सह सम्पादक) यह अति कठिन, अति मौलिक और गहनतम छानबीन और खोज का कार्य भगवान ऐसे समय में कर रहे हैं जब कि सामाजिक कामों के कई विभाग उन्होंने अपने हाथ में ले लिए हैं। धन सम्पत्ति विभाग का काम सन्तोषजनक नहीं था। भगवान ने उसकी भली भांति पड़ताल की ओर यह देखकर उनको बहुत आघात लगा कि धन इस प्रकार खर्च किया गया है कि समाज कर्ज़दार हो गई है। इस एक संकट ने ही किसी को क्षीण कर दिया होता। निराश तो अवश्य कर दिया होता। भगवान की उमर के 75 वर्ष पूरे हो चुके थे, परन्तु भगवान की निरन्तर प्रगति – शील देव प्रकृति जहां कुछ भी खराबी है

उसे दूर करने और सुधार लाने के लिए उन्हें प्रेरित करती है। उसने उन्हें विवश कर दिया कि इस विभाग को भी अपने हाथ में ले लें। बड़े मूलभूत परिवर्तन किये गये। यहां तक कि अंग्रेजी की एक मात्र पत्रिका विज्ञान मूलक धर्म (Science Grounded Religion) जो बीस वर्ष से चल रही थी बन्द कर दी गई। प्रधान कार्यालय के स्टाफ में, छापेखाने में, सेक्रेटरी के दफ्तर में तथा अन्य पक्षों में अनेक परिवर्तन किये गये। इससे बहुत कुछ सुधार हुआ और यह सब सुधार लाना भगवान का ही काम था।

मैं जिस बात को अपने मन में बैठाना चाहता हूँ वह यह है कि जब भगवान आर्थिक कुप्रबन्ध को देखकर भौंचक्का थे और उस विभाग को अपने हाथ में ले लेने के सिवाए और काई उपाय नहीं था और समाज के कर्ज़दार होने का विचार ही उनके अद्वितीय हृदय के लिए अत्यन्त दुखदाई था, तब भी अध्यात्मिक क्षेत्र में उनकी खोज का काम बन्द नहीं हो गया। लेखन कार्य भी होता रहा। प्रैस में पृष्ठ के पृष्ठ महान सत्यों से भरपूर छपते जा रहे थे।

हम अनेक बार भगवान की अजेय देव प्रकृति के कार्य को अति आश्चर्य से देख रहे थे। एक बालक भी जानता है कि किसी बहुत अप्रिय घटना का आघात चित की एकाग्रता में कितना बाधक बनता है या ध्यान जमाना असम्भव कर देता है। यह मनोवैज्ञानिक नियम भी यहां क्यों हार गया! मैं उन बुराईयों का उल्लेख यहां करना चाहूंगा, जो उन तीन वर्षों में समाज में व्यापत हुई थीं कि जिन वर्षों में भगवान अनुपम और नवीन सत्यों को पुस्तकाकार में प्रदान करके हमें आलोकित कर रहे थे।

1. भगवान देवात्मा के ज्येष्ट पुत्र, जो एक महान विचारक थे, परलोक सिधार गये और उनका स्थान शून्य हो गया। उनका देहान्त 5 मई सन 1926 के दिन हुआ।

2. पण्डित कान्ति नारायण जी पूजनीय भगवान के एक ही ऐसे पुत्र समझे जाते थे, जो अपने देव पिता के सम्बन्ध में पुत्रोचित भाव रखते थे, अपने जीवन से ऐसे विरोधी लक्षण दिखाने लगे जिनके कारण अन्तत: यह सेवक भी न रहे और भगवान को उनकी अवस्था को देखकर यह कहना पड़ा कि वे ऐसे पुत्र का भी त्याग कर सकते हैं।

3. समाज की अर्थव्यवस्था भगवान के लिए अत्यन्त चिन्ता जनक और निराशा जनक थी, जिसके कारण उन्हें यह विभाग भी स्वयं सम्भालना पड़ा।

4. प्रोबेट के मुकदमे की दुखद कथा ऐसी थी कि उसके कारण कुछ प्रमुख जनों ने भी शत्रुओं से लड़ने की बजाए भगवान पर ही अपने तीर चलाने आरम्भ किए जो भगवान के लिए अत्यन्त आघातकारी थे। (जैसे आज के जमाने तक हो रहा है)

5. कुछ प्रमुख सेवकों तक ने, उन आधारभूत विश्वासों के सम्बन्ध में, जो देव समाज के मौलिक सिद्धान्तों के लिए अनिवार्य जानकर भगवान ने प्रचलित किए थे, अपनी दयनीय अवस्था का परिचय दिया। भगवान ने देखा कि ऐसे जनों को भी देव समाज में प्रविष्ट कर लिया जाता है जो देवी देवताओं में भी विश्वास रखते हैं और भगवान देवात्मा को एक मात्र परित्राता नहीं मानते। यह सब कुछ भगवान के लिये असह्य था। सच्चाई की मांग थी के देव समाज का प्रत्येक सभासद

अपने जीवन और विश्वासों के विचार से भी देव समाजी हो। अत: भगवान देवात्मा ने सारी समाज का नवीनीकरण कर दिया और नए प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य कर दिया। ऐसे जन जो अन्य विश्वास रखते थे, अलग कर दिए गए। हमारे आज के राजनैतिक जीवन में बड़ी संख्या आवश्यक है परन्तु भगवान के लिए और कोई उपाय नहीं था। जो असल अवस्था सन्मुख थी वह भगवान के लिए बहुत आघातकारी थी। कुछ ऐसे भी प्रमुख सेवक थे, जो देव समाज के सिद्धान्तों में विश्वास रखकर भी यह कहते प्रतीत होते थे कि इन प्रतिज्ञाओं को लागू करने की आवश्यकता नहीं। उन्होंने भी प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किए। वह देव समाज को एक क्लब बनाना चाहते थे न कि एक सच्ची धर्म समाज, जिसका अपना कोई आदर्श हो और उसकी पूर्ति लक्षित हो। देव समाज की स्थापना इस लक्ष्य के लिए की गई थी कि वह भगवान के देव जीवन और उनके आदर्शों के प्रसार वा प्रचार में सहायक बने। देव समाज को एक क्लब बना कर यह लक्ष्य कैसे पूरा हो सकता था?

6. भगवान देवात्मा ने अनुभव किया कि कुछ आत्मा जो आत्म परिवर्तन विभाग में काम करते हैं वह आत्माओं में उच्च परिवर्तन लाने का वास्तविक काम करने की अपेक्षा आर्थिक सहायता प्राप्त करने के अधिक इच्छुक हैं। भगवान ने अनुभव किया कि जब तक प्रचारक (मिशनरी) निष्काम सेवा से परिचालित होकर काम नहीं करेंगे, तब तक आत्माओं में उच्च परिवर्तन की आशा नहीं हो सकती। अत: उन्होंने प्रचारकों की मासिक वृति बन्द कर दी और घोषणा कर दी कि जो सफलता पूर्वक काम करना चाहते हैं, वह समाज से बिना कुछ आर्थिक सहायता लिए कर सकेंगे। इसके फलस्वरूप कार्यकर्ताओं की संख्या घट गई। भगवान के लिये यह दृश्य बहुत दुखद था कि मासिक सहायता बन्द होने से, कार्यकर्ता अपना कार्य छोड़ बैठें, जबकि ऐसे जन भी हैं, जो अपनी जीविका कमाने के साथ साथ प्रचार कार्य भी करते हैं।

7. दीवान हासामल के बेटे मोती लाल ने जो अपने पिता को देव समाज से हटाने और उनके द्वारा कोयटे में ट्रस्टियों के विरुद्ध दुर्भावपूर्ण पूर्णत: झूठे अभियोगों के आधार पर मुकदमा करवाने में मूल कारण थे, कई मुकदमें खड़े कर दिए। उसने चुन्नी लाल द्वारा मन्दिर का कब्जा हथियाने के लिए एक केस कर दिया और एक दूसरा केस अपने पुत्रों अमृत लाल और कन्हैया लाल द्वारा उस ट्रस्ट को समाप्त करने के लिए करवा दिया कि जो ट्रस्ट लाहौर के देव समाज कालिज और हाई स्कूल के लिए था। भगवान को इस से बहुत आघात लगा।

एक या दूसरी गिरावट के कारण कुछ कर्मचारियों को पवित्र मंडल से हटा दिया गया। दीवान हासामल की एक विधवा पुत्रवधु को देव समाज की सभासदी से इसलिए खारिज कर दिया गया कि वह देव समाज के पक्के शत्रु अपने पति के भाई मोती लाल की सहायक बन गई थी। विरोधियों के सहायक बनने से समाज को सदा ही बहुत हानि हुई है। एक अन्य कर्मचारी ने त्याग पत्र दे दिया है। एक तीसरे को भी एक दोष के कारण निकाल दिया गया है। यह सब घटनाएं इन दो वर्षों में हुई।

हम समझ सकते हैं कि जब देव समाज पर यह सारे संकट इन दो वर्षों में आन पड़े तो

क्या इनका विध्वंसकारी प्रभाव किसी आत्मा पर नहीं होगा? परन्तु जैसे सूर्य अपने परिक्रमा - पथ में अपना प्रकाश निरन्तर प्रदान करता है, उसी प्रकार भगवान निविघ्न रूप से और निर्भय रह कर अपनी अद्वितीय ज्योति प्रदान करते हैं और इसलिए जबकि दुनिया उनको कुचलने का षड़यन्त्र कर रही थी, भगवान बढ़ चढ़कर अपनी अद्वितीय ज्योति और शक्ति प्रदान करने के लिए कृतसंकल्प हैं।

(पी.वी. कनल)

क्या आम इन्सानियत किसी सच्चे धर्म की तलाश में है?

इस सवाल का ठीक जवाब देने की गर्ज़ से जब हम इन्सानियत की हालत पर विचार करते हैं तो ये मालूम होता है कि मौजूदा इन्सानियत में आम तौर से चार तरह के इन्सान पाये जाते हैं यानि : -

पहली किस्म के वो इन्सान हैं जिनको हम लद्दूमल कह सकते हैं, कि जो सुबह से शाम तक बल्कि कितनी कितनी रात तक लद्दू जानवर - बैल, ऊँट, गधे, खच्चर या घोड़े की तरह दुनिया और दुनिया के सामानों और पदार्थों को ढ़ोने का काम करते हैं। जैसे एक एक गधा वगैरह लद्दू जानवर को देखा है कि वो अपने मालिक के हाथों में सुबह तड़के से ही मिट्टी, कूड़ा कर्कट, ईंट पत्थर वगैरह ढोने शुरू करता हैं, शाम तक ढोता रहता है और शाम को थोड़ी सी घास खाकर पड़ जाता है, इस बेचारे को दम लेने की कोई फ़ुरसत नहीं मिलती, इसी तरह से लाखों और करोड़ों इन्सानों का हाल है। उनको न सिर्फ अपने जीवन की, बल्कि अपने अपने जिस्म की भी कोई होश नहीं है। उनकी ज्यों ही सुबह आँख खुलती है, उनके भीतर धन, दौलत, जायदाद वगैरह सामानों के संबंध में चक्कर चलने लगते हैं और वो उनके वश में होकर मारे मारे फिरते हैं। वो दिन और रात लद्दू जानवर की तरह काम करते है, और उनमें से बाज़ तो आराम से बैठ कर रोटी भी नहीं खा सकते। ऐसों की हालत तो लद्दू जानवरों से भी बदतर है, क्योंकि लद्दू जानवर को तो उसे जब छोड़ दो तब वो आराम से बेफिक्र होकर सो तो जाता है, मगर इन लद्दू इन्सानों को तो रात को भी नींद नहीं आती। ये उस समय में भी कितनी कितनी देर तक कूड़ा ढोने के चक्करों में लगे रहते हैं। लद्दू जानवर को तो उसका मालिक जबरदस्ती पकड़ कर ले जाता है, कूड़ा उठवाता है, लेकिन ये पढ़ा लिखा इन्सान अपने भीतर की ही धन, मान आदि की वासनाओं का गुलाम होकर खुद बखुद बड़े चाव से कहता है कि मुझको लद्दू जानवर बनाओ। खुद अपने आप ऐसा काम लेता है कि जिससे उसके जिस्म और आत्मा दोनों का नाश होता है। ओहो! ऐसे इन्सानों की कैसी तरसनाक हालत!!

दूसरी किस्म के वो इन्सान हैं, जिनको हम बातूनीमल के नाम से नाम दे सकते हैं। ये वो इन्सान हैं जो एक एक विषय में बातें बहुत बनाते हैं लेकिन करते कराते कुछ नहीं। फजूल बहस मुबाहसा, दलील बाजी और हुज्जत बाज़ी करना और गप्पें मारना उनका काम बन गया है। जिनकी आदत ये हो गई है कि वो झूठ सच का खयाल छोड़ कर जैसा मौका देखते हैं, वैसी बात कर देते हैं। ये लोग ऐसा करने में अपनी ख़ूबी

ख़याल करते है और अपने आप को बड़ा फिलासफर समझते हैं और ये डींग मारते है कि वो एक दूसरे बड़े विषयों पर खूब जायज़ व नाजायज़ दलीलबाज़ी और हुज्जत बाज़ी कर सकते हैं और दूसरों को बातों में ही पराजय दे सकते हैं।

तीसरी किस्म के वो कसरत से इन्सान हैं जो मौज बहार मल के नाम से पुकारे जा सकते हैं। इन लोगों का लक्ष्य है, खाओ, पीओ और मौज करो। जो कुछ है यही दुनिया है। अब तो आराम से गुज़रती है, आगे की ख़बर खुदा जाने। ऐसी जमायत के लोग अपने ख़्याल के मुताबिक खूब मौज़ बहार करते हैं, उनकी बला से कोई मरता है या जीता है, कोई दुखी है या सुखी, इस श्रेणी के लोगों को तो अपनी मौज बहार से गर्ज़ है। वो अपनी नीच रुचियों की सेरी के सामानों में लगे रहते हैं, इस जमायत के कितने ही लोग रातों को कितनी कितनी देर तक सैर व तमाशे देखते रहते हैं, यार दोस्तों के साथ तरह तरह की मौज बहार करते रहते हैं। और सुबह बहुत दिन चढ़े बिस्तर से उठते हैं, और कहते हैं कि जिस्म और जिस्मानी इन्द्रियों के जरिये जो कुछ मज़े हासिल हो सकते हैं, वही मज़े हासिल करने हैं। बाकी जीवन और परलोक पाप और पुण्य के ख़यालात सब ढकोंसले हैं, न कोई पाप है न पुण्य है, मरने के बाद कुल हस्ती का ख़ात्मा है, जब तक जिस्म जिंदा है तभी तक मौज के दिन हैं, इसके बाद न कोई सुख है न कोई दुख है, इसीलिए मनुष्य जन्म पाकर इसके लिए यही ज़रूरी है कि जब तक जीयें खूब मौज़ से जीयें। पश्चिमी शिक्षा और तहजीब में इस तरह के विश्वास का खास कर बहुत ज़ोर है और उस शिक्षा व तहजीब के साथ साथ इस देश के लोगों में भी आहिस्ता आहिस्ता इसका असर फैलता जाता है।

चौथी किस्म के वो कसरत से इन्सान हैं जिनको मत के मतवाले मल कहा जा सकता है। ये लोग सिर्फ एक व दूसरी देवी देवता ईश्वर, खुदा, ऋषि मुनि, पीर पैगम्बर, को मानने या न मानने, वा एक या दूसरी पुस्तक को ईश्वरीय कहने या ना कहने, एक या दूसरे तीर्थ या पूजा स्थान पर जाने या न जाने, ख़ास तरह के सिर के बाल या मूछें रखने या न रखने, ख़ास रंग के कपड़े पहनने या न पहनने, किसी ख़ास दरिया, तालाब वगैरह में नहाने या न नहाने, किसी ख़ास दिन भूखा रहने या न रहने, किसी देवी देवता के नाम पर मासूम जानवरों की कुर्बानी करने या न करने, किसी फर्जी अस्तित्त्व का नाम बार बार जपने, अग्नि जला कर इसमें घी वगैरह डालने या न डालने, वगैरह बातों में ही धर्म और अधर्म खयाल करते हैं। और इन्हीं बातों के मतवाले हैं। वो इन्हीं बातों को लेकर एक दूसरे के साथ झगड़ा फसाद रखते हैं, यहां तक कि खून भी कर देते हैं। आम तौर से उपरोक्त एक वा दूसरी किस्म के इन्सानों से दुनिया भरी हुई है, उनमें से किसी के सामने अपने असल मनुष्य जीवन वा आत्मिक जीवन (आत्मिक जिन्दगी) को कोई सवाल ही नहीं है। कितने हैं, जो इस पहलू में अबोधता या अंधकार की हालत में हैं, और कितने हैं जो इस विषय में मिथ्या परायण हैं, जिसका फल ये हो रहा है, कि इन्सानी दुनिया के लोगों को विविध तरह की अनुचित तकलीफें मिल रही हैं, बेज़ा अनुचित नुकसान पहुंच रहे हैं, हाय पुकार मच रही हैं, विविध अपराधों की बिना पर नालिशें और अपीलें हो रही हैं, डंडे और लठ चल रहे हैं,

बन्दूकों और तोपों के जरिये जंग हो रहे हैं, खून और आत्मघात हो रहे हैं, डाके पड़ रहे हैं, लूट मार जारी हैं, धोखे और फरेब की गरम बाज़ारी है, चोरी ठग्गी हो रही है, रंजोगम दिल की जलन और ना उम्मीदी की आहें निकल रही हैं, जुल्मोसितम की याचनाएं हो रही हैं, गर्ज़े कि इन्सान के हाथ से न सिर्फ इन्सान बल्कि हज़ारों और लाखों बेकस और गूंगे हैवानों पर भी आफत, मुसीबत और तबाही और बरबादी की हालत छायी हुई है, करीबी से करीबी संबंधी भी एक दूसरे से दुखी हैं। ओह! कैसा दर्दनाक दृश्य!!

इन्सानियत की ऐसी हालत क्यों हो रही है? इसलिए कि इन्सान अपने असल वजूद यानि आत्मा, रूह, स्वभाव व जीवनी शक्ति के सही ज्ञान के संबंध में पूर्णत: अबोधी या अंधकार की अवस्था में है। कसरत से तो ऐसी हालत में हैं कि उनको कोई पता नहीं हैं कि हम जीवनधारी होकर आत्मा रखते हैं, वो बिल्कुल पशुओं की तरह से हैं। जिनको अपने जिस्म के संबंध में भी कोई होश नहीं है उनमें ही वो शामिल हैं, जो ये कहते हैं कि आत्मा वगैरह कुछ नहीं, जब तक सांस हैं सब कुछ है, बाद में सब ख़ाक है। कुछ ऐसे हैं जो आत्मा के संबंध में विविध तरह की झूठी बातों पर यकीन रखते हैं। उदाहरणार्थ वो खुदा की फूंक है, वो खुदा का हुक्म है, वो अनादि है, वो निर्लेप है, वो कभी पौधे, कभी पेड़ कभी सांप, बिच्छू, शेर, एक वा दूसरे जानवर और मनुष्य की योनि में फिरता रहता है। चूंकि इसके संबंध में तरह तरह की गप्पें मारी गई हैं, इसी कारण से ही धर्म और अधर्म के संबंध में भी गप्पें मारी गई हैं, या इस तरह की बातें जारी की गई हैं जिनका मनुष्य आत्मा के साथ कोई संबंध नहीं है। और उनका तो कहना ही क्या है जो सिर्फ मतों के मतवाले हैं। उनकी जिन्दगी भी विविध रिश्तों और व्यवहारों में बेवफा, दुखदाई और हानिकारक बन रही है। और ये और भी अफसोसनाक है कि वो ऐसी ज़िन्दगी रख कर उससे उद्धार पाना भी नहीं चाहते। ये सब कुछ भली भांत प्रगट कर रहा है कि आम इन्सानियत सच्चे धर्म की खोजी नहीं है। तब जो इन्सान दिमागी सोच विचार की ताकतें रखता है, उसके लिए ये सवाल हल करने की ज़रूरत है कि किस तरह से इन्सानों की उपरोक्त बेसुधी दूर हो, उनकी नारकी, दुखदाई, मिथ्या और अंधकार की हालत बदले, और वो अपने और अन्य विविध वजूदों के लिए सचमुच लाभदायक और हितकर वजूद बन सकें। ये उसी वक्त हो सकता है, जब इन्सानियत में सच्चे विज्ञानमूलक धर्म का प्रचार हो।

क्या कहीं ऐसा विज्ञान मूलक धर्म मिल सकता है? हम उसके जबाव में बहुत जोर के साथ ऐलान करते है कि हां मिल सकता है। श्री देव गुरु भगवान देव समाज के बानी जिन निराली देव शक्तियों की बीज रूप में लेकर प्रगट हुए हैं, और जिन शक्तियों को उन्होंने अपने नाना प्रकार के संग्रामों, त्यागों, तपों और साधनों वगैरह के ज़रिये अपने भीतर विशेष रूप से विकसित करके अद्वितीय देव जीवन लाभ किया है वो बिल्कुल निराला है। इस देव जीवन को पाकर श्री देव गुरू भगवान ने अपनी देव ज्योति के उजाले में वो आत्मिक तत्त्व देखे और उनकी शिक्षा दी है, जो नेचर के नियमों और घटनाओं पर आधारित है, जो तत्त्व किसी और ने नहीं देखे और उनकी शिक्षा नहीं दी। इसलिए उन्होंने ही ये तत्त्व मालूम

किया है कि मनुष्य की गठन प्राप्त जीवनी शक्ति ही उसका आत्मा या रूह या soul है, जो हर क्षण और हर मुर्हूत इसी तरह तबदील हो रहा है, जिस तरह इस विश्व के बाकी कुल वजूद। यानि वो हर वक्त अपने व विश्व के और वजूदों के संबंध में अपनी अन्दरूनी उचित या अनुचित चिंताओं और बाहर के कर्मों के लिहाज़ से उच्च या नीच बनता जाता है और तरक्की करता है या मौत को प्राप्त होता है।

जहां एक तरफ श्री देवगुरु भगवान ने आत्मा के संबंध में बिल्कुल निराले व विज्ञान मूलक तत्त्व मालूम किए, वहां दूसरी तरफ धर्म या मज़हब के संबंध में भी नई तहकीकात की है, इसलिए उनकी शिक्षा के अनुसार धर्म या मज़हब किसी बाहर की पूजा, पाठ, आडम्बर किसी को मानने या न मानने में नहीं, बल्कि मनुष्य आत्मा के अंदर एक तरफ नीच गति विनाशक और दूसरी तरफ उच्च गति विकासक व उच्च शक्तियों के पैदा और उन्नत होने का नाम ही धर्म है। इन शक्तियों के बारे में सत्य ज्ञान के न मिलने से इस दुनिया के विविध देशों और शहरों और गाँव में करोड़ों इन्सान अंधेरे में पड़े हुए हैं, और सत्य धर्म और उनके साधनों और तरीकों से बिल्कुल अज्ञानी हैं।

इसलिए धर्म उन शक्तियों का नाम है जो मनुष्य आत्मा के अंदर उच्च परिवर्तन पैदा कर दें, या यूं कहो कि मनुष्य आत्मा में उच्च परिवर्तन का नाम ही धर्म या मजहब है। लाखों और करोड़ों इन्सानों में से जिनका हमने ऊपर ज़िकर किया है, कौन है जो सचमुच संजीदगी से और निष्पक्ष होकर ऐसे धर्म को पाये, ऐसे धर्म को अपनी ज़िंदगी में हासिल करने के लिए कशमकश में लगा हुआ हो, जो ऐसे धर्म की तलाश में हो, कि जो उसके अपने जीवन में एक तरफ नाना प्रकार की नीचताओं, और मंद कर्मों के संबंध में नफरत पैदा करे और विविध उच्च विचार और उच्च भाव पैदा करे। आम इन्सानियत क्यों ऐसे सच्चे और विज्ञान मूलक धर्म की खोजी नज़र नहीं आती। इसलिए कि आम तौर से इन्सान नीच वासनाओं और रुचियों के आशिक हैं, वो उनको पसंद हैं, इसलिए वे ऐसा धर्म चाहते हैं कि जिसमें एक या दूसरा विश्वास कर लिया या बाहर का आडम्बर रख लिया जावे और बस। जिससे अपनी वासनओं और रुचियों की उचित या अनुचित सेरी में किसी किस्म की दखल अंदाजी न हो। इसलिए नतीजा ये हो रहा है कि कितनी तरह के मत मतान्तर उनके जहनुम या नर्क के भयानक डरावे और स्वर्ग या बहिश्त के दिलकश नज़ारे और लालच देकर मनुष्यों को भ्रान्ति में रखते है। गवर्नमैंट और उनके अच्छे प्रबंध और नियमों के होने पर भी दुनिया में पिशाचत्य का राज है।

तब सख़्त जरूरत है कि अधिकारी जन अपनी ज़िन्दगी को सफल करने के लिए अपने मनुष्य जन्म को अशरफ मखलूकात साबित करने के लिए ऐसे देवात्मा देव गुरू भगवान की शरण लें, जिनकी शरण में आकर ही और उनके साथ श्रद्धा और आकर्षण मूलक शुभ संबंध कायम करके ही, सच्चे धर्म की वो रोशनी और बल मिलता है जिससे इन्सानी जिंदगी में उच्च तबदीली आनी शुरू होती है, और अधिकारी इन्सान पाप जीवन से निकल कर इसी दुनिया में विविध रिश्तों में पवित्रता और धर्मराज की बरकतों को पाकर मालामाल होने का महोच्च अधिकार लाभ करते हैं।

(श्रीमान मुरलीधर जी)

आपकी ज्योति में हमें अपने अपराध दिखाई देते हैं।

जीवन दाता भगवन!

एकमात्र आपकी ज्योति ही हमारा आश्रय है। केवल यही एक ज्योति हमारे आत्मा की शक्तियों की लीला हम पर प्रकट करती है। केवल यही ज्योति हमें हमारे उन नीच - अनुरागों और नीच - घृणाओं का घृणित रूप दिखाती है कि जो अन्यथा हमें बड़े सुहाने दिखाई देते हैं, और जिनका पक्ष - समर्थन करने में हम एक वैश्या की न्याईं अपने दिमाग का दुरुपयोग करते हैं। एकमात्र आपकी ज्योति ही मानवता के इन भयानक शत्रुओं का असल रूप प्रकट करती है। इनका वास्तविक रूप दिखाकर आपकी ज्योति ही हमें उनसे भयभीत करती है, तथा उनके प्रति घृणा उपजाने के हेतु हमें आपकी ज्योति प्राप्त करने की प्रेरणा देती है। एकमात्र आपकी ज्योति के भव्य प्रकाश में यह सर्वथा बेकार और राक्षसी शक्तियां और उनकी कठोरता घटती है। आपकी पावन ज्योति के अदभुत प्रकाश में इन शक्तियों की वर्तमानता हमें लज्जित कर देती है। हम कितनी शान्ति अनुभव करते हैं, जब आपकी ज्योति इस प्रकार हमारे आत्मा के आंतरिक जीवन को आलोकित कर देती है। जिन्हें हम पहले अपना वरदान और मित्र अनुभव करते थे, उन्हीं से अब उद्धार पाने के संग्राम में पड़ना कितना सुखद लगता है। जिन शक्तियों को अपना स्वामी बनाकर हमने दूसरों के अधिकारों का अनेकों बार अपहरण किया और जिन अपहरणों को आपकी ज्योति प्राप्त करने से पहले हम अपने जीवन की जीत समझते थे, उन्हीं को अब सन्मुख लाकर हम अत्यंत लज्जा अनुभव करते हैं और पछताते हैं। जीवन का सारा दृष्टिकोण ही बदल जाता है, जब हमें आपकी ज्योति प्राप्त होती है। वस्तुएं अपने असल रूप में प्रकट होती है। जहां पहले नीच - अनुरागों तथा नीच - घृणाओं को तृप्त करने में सफल होना हमें घातक अहंकार तथा आकड़ से भर देता था, वहां अब हम यह बोध पाकर सच्ची और जीवनदायक दीनता अनुभव करते हैं कि नीच - अनुरागों और नीच घृणाओं का पथ कितना घातक पथ है।

आपकी ज्योति जो काम एक झलक में कर देती है, वह कोई अन्य वस्तु हमारी सारी आयु में भी नहीं कर सकती। मैंने देखा है कि एक बेटा जो पहले वर्षों तक अपने को ठीक और अपने पिता को गलत ठहराता रहा और वर्षों अपने जन्म दाता से फटा रहा, आपकी ज्योति पाकर रोने लगता है। एक ही सभा में आपकी ज्याति उसके आत्मा के ऊपर से अन्धकार का पर्दा उठा देती है। उसे वह कुछ दिखाई देता है कि जिसका उसे स्वप्न तक भी न आया था। उसे नज़र आता है कि वह अपने पिता के सम्बन्ध में कितना निर्दयी तथा कृतघ्न बना रहा। पिता को उसके कारण वर्षों तक जो दुखों और अकेलेपन में जीवन बिताना पड़ा, उसका दृश्य उसके सन्मुख आने लगता है तथा वह बच्चों की तरह फूट - फूटकर रोने लगता है और पिता के पास जाकर उसके चरणों में गिर जाता है, और पिता के चरणों को अपने आंसुओं से धोने लगता है। जिस कारण से यह बरबादी आई, वह अब अपने नग्न रूप में उस पर प्रकट होता है तथा उस कारण को अब वह दूर कर देता है।

पिता विस्मित होकर पुकार उठता है, "तुम्हारे जीवन में यह चमत्कार कैसे हो गया!" पिता को हैरानी होनी ही थी परन्तु चमत्कार तो सच्चा चमत्कार था।

एक और घटना मेरे देखने में आई, जिसने मुझे विचारों की नई दुनिया में पहुंचा दिया। एक पति जो अब बहुत दुखी है, वह पहले भी दुखी था। एक बार उसे आपकी ज्योति पाने का अवसर मिला.....। उसे ऐसी लज्जा अनुभव हुई कि जिसे अनुभव करना उसके स्वभाव के विरूद्ध था। उसने पत्नी के सम्बन्ध में अपने बुरे व्यवहार को देखा तथा अपने आप पर बहुत फटकार डाली। परन्तु उसका दुर्भाग्य था कि वह इस ज्योति से दूर चला गया। वह फिर उसी प्रकार दुखी रहने लगा तथा अपनी पति, अपने मित्रों एवं सारी दुनिया को उसने फिर से दोषी ठहरा दिया। बड़ी आसानी से अपने आपको निर्दोष समझ लिया। वह बहुत अध्ययनशील है मैंने उसे समझाने का यत्न किया, परन्तु मेरा कुछ कहना कहाँ कारगर हो सकता था। आपकी ज्योति के उसके भीतर प्रवेश करने का कोई मार्ग नहीं रह गया था। वह फिर अपनी पत्नी के सम्बन्ध में उसी प्रकार अपराधी है। उसका घरेलु जीवन दुखों का घर बना हुआ है। परन्तु उसे अब कुछ दिखाई नहीं देता। आह! आपकी ज्योति के बिना हम कितने बेबस हैं।

कदाचित हम आपकी ज्योति की महिमा देख सकें। व्यक्तियों और जातियों के हाथों में यही ज्योति एकमात्र ऐसा शस्त्र है जो उन्हें नीच – अनुरागों और नीच – घृणाओं का भयानक रूप दिखा सकता है जो उन पर शासन करते हैं, जिनका मनुष्य प्रेमक है। जिनके पास आपकी ज्योति की लालटेन है, वह सावधान रहकर सुरक्षित स्थान की ओर चलते जायेंगे तथा नीच – अनुरागों एवं नीच – घृणाओं से छुटकारा पाने का भरसक संग्राम करेंगे। वही जन आत्मिक – जगत में आश्चर्यजनक फल उत्पन्न कर सकेंगे, और वही आपके कर्मचारी होंगे। आपका मिशन उन लोगों के द्वारा अधिक सफलता से पूरा होगा, जो हल चलाने वाले हैं, परन्तु आपकी ज्योति से ज्योतिर्मान हैं, न कि उन ऊंचे दिमाग रखने वाले जनों के द्वारा कि जो आपकी ज्योति से विहीन है। मैं आपके द्वार से यही भिक्षा माँगता हूँ कि मैं और अन्य मनुष्य आपकी अद्वितीय ज्योति और उसके अनुपम महत्त्व की कदर कर सकें, और उसको प्रति दिन प्राप्त करना अपना कर्तव्य समझ सकें। रक्षा और विकास का यही एकमात्र उपाय है। मैं और अन्य जन आपका आशीर्वाद पा सकें।

(एक सेवक)

भगवान देवात्मा की शिक्षा हर सम्बन्ध में अद्वितीय है

परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शिक्षा हर सम्बन्ध में न केवल अद्वितीय है बल्कि उनके जीवन की घटनाएं हर सम्बन्ध में एक ऐसा आदर्श स्थापित करती हैं, जैसा किसी पीर, पैगम्बर, देवी देवताओं के जीवन में नहीं देखा जा सकता। उनकी अद्वितीय शिक्षा के अनुसार भजन, कीर्तन, आस्था धर्म नहीं हमारे सम्बन्धों में हमारे व्यवहारों में धर्म है। हम अपने आपको कितना बड़ा समझते रहें परन्तु हमारे व्यवहार हमारा आईना हैं, जो हमारी सही तस्वीर पेश करता है।

भगवान देवात्मा ने अपने मताहत काम करने वालों वा उनके स्वामी होने पर बहुत कीमती हिदायतें दी हैं, उनकी कुछ भी पालना करने से हमारा सम्बन्ध बहुत मधुर और शान्ति-मय हो सकता है और लम्बे समय तक बना रह सकता है।

हमारे मताहत काम करने वाले, विशेषकर घर में हमारे सहायकों के साथ हमारा सम्बन्ध कैसा है और कैसा होना चाहिए, पहले हम इस पर विचार करते हैं।

आत्म सन्मान :- छोटे से छोटे वर्कर में भी आत्म सम्मान होता है, परन्तु अपनी मजबूरियों में उनको कुचलना पड़ता है। यदि हमारी बोलचाल में, उनको हुक्म देते समय हमारा ढंग नम्रता का नहीं, कर्कश है, तो उनके भी आत्म सम्मान पर चोट लगती है ओर उनका दिल दुखता है, और कई सहायक आपका काम छोड़कर भी चले जाते हैं। यहां पर सहायक टिकते नहीं, वहां उनके प्रति सम्मान की कमी, वा उनकी ज़रूरतों को अनदेखा करना होता है।

सराहना की कमी :- प्रत्येक मनुष्य में ही यह कमज़ोरी होती है कि वह जब अच्छी सेवा करते हैं, उनकी सराहना हो, थोड़ी सी गल्ती वा लापरवाही पर उन्हें ताड़ना तो मिलती है, परन्तु उनकी अच्छी सेवाओं के लिए सराहना भी मिल जाए, तो वह ताड़ना भी सह लेते हैं। छोटी 2 गल्ती पर ताड़ना, झिड़कना, किसी के सामने उनको अपमानित करना, इस रिश्ते को कड़वाहट से भर देता है। हम पैसे ज़्यादा भी दे दें, परन्तु अपने मताहतों का सम्मान वा सराहना न करें तो उन्हें जब मौका मिलेगा आपको छोड़ जाएंगे। यह कितनी बड़ी मुसीबत होती है वह करोना के दिनों में अनुभव किया। जिनके सहायक घर पर ही रहते थे, उनको तो कोई फर्क नहीं पड़ा, परन्तु जो प्रतिदिन झाड़ू पोचा करने, सफाई करने, बर्तन साफ करने वा खाना बनाने के लिए आते थे, उन्होंने आना बन्द कर दिया, तो घरों में क्या नर्क पैदा हुआ, उसकी बहुत घटनाएं देखने को मिली। पुरुष जो घर के काम करना जानते भी नहीं थे, उन्हें भी सफाई, बर्तन आदि करने पड़े। जिन पतियों ने काम में मदद नहीं की, कईयों के तलाक तक हो गए। हां जो मददगार बने उनके सम्बन्ध बेहतर भी हुए। परन्तु सबने अपने सहायकों की ग़ैरमौजूदगी शिद्त से महसूस की, उनके महत्त्व को समझा कि उनकी सहायता के बिना उनको जीवन में कितनी उथल पुथल मच गई। ऐसे सेवाकारियों की सराहना न की जाए, तो हमारा धर्म कहां है?

शुक्रगुज़ारी :- अपने सहायकों की सहायता के लिए शुक्रगुज़ार होने की आवश्यकता है। पिछले दिनों मेरे धर्म पति बीमार हो गए। हमारे सहायकों ने जो सेवा की, उनकी सेवा को देखकर एक दिन मेरे आंसू निकल आए कि इन बच्चों ने किसी प्रकार की सेवा से भी परहेज़ नहीं किया। रात को भी डियूटी दी कि उन्हें रात को कोई ज़रूरत न पड़ जाए। उनकी इन सेवाओं का कर्ज़ा हम कैसे चुका सकते हैं। बार 2 उन्हें धन्यवाद देती रहती हूं कि इनकी वजह से हमारा बुढ़ापा कितना सुखमय है। बहुत से जनों को मैंने सुना है, कि आप अपने मताहतों को बहुत सिर पर चढ़ाते हो, हो सकता है, पर क्या वह किसी के बच्चे नहीं? उनको प्यार और सम्मान का

अधिकार नहीं? उनको बार 2 धन्यवाद देना अपने दिल को भी और उनके दिल को भी सकून देता है।

मताहतों से काम लेने की सीमा :- कई जन कहते हैं कि हम लोगों से ज़्यादा पैसे देते हैं, तभी यह काम करते हैं। क्या पैसे आपका खाना बना सकते हैं? सफाई कर सकते हैं? आप अपने मताहतों का ख़्याल नहीं रखेंगे, उनके आराम के लिए कम से कम 2 – 3 घण्टे नहीं देंगे तो आप अन्यायकारी बनेंगे। हां, कभी बहुत आवश्यकता पड़े तो वह अपने आराम का त्याग खुशी 2 कर देंगे।

परम पूजनीय भगवान की शिक्षा के अनुसार अपने मताहतों से उतना ही काम लेना चाहिए, जिसके लिए वह नियुक्त किए गए हैं। ज़्यादा बोझा नहीं डालना चाहिए। प्रतिदिन ऐसी घटनाएं होती हैं कि सहायक अपने मालिकों को ही मार देते हैं, जब उनके साथ व्यवहार अच्छा नहीं होता। कई घटनाएं हमारे सामने की हैं। हां, कुछ लालच के कारण भी ऐसा घिनौना काम करते हैं, परन्तु हमारे व्यवहार भी किसी हद तक ज़िम्मेवार होते हैं।

तनख़्वाह के अतिरिक्त मदद :- त्यौहारों पर, उनके बच्चों के दाख़िले, पढ़ाई के लिए, बीमार होने पर दवाई आदि के लिए उनकी मदद करते रहना भी आवश्यक है। उनके खान पान का ख़्याल रखना, टोका टाकी न करना, उनसे इनका आत्म विश्वास बढ़ जाता है कि वह कभी 2 अपने खाने के लिए स्वादिष्ट पदार्थों का आर्डर करना चाहें, या उनके स्वामी उनके लिए कभी 2 ऐसा करते रहें, तो वह अवश्य प्रसन्न होंगे। उनकी प्रसन्नता उनको काम करने का उत्साह देती है।

ग़ल्तियों की क्षमा :- प्रत्येक जन से काम करते हुए ग़ल्ती होती है, हम भी उसमें शुमार हैं, परन्तु जब हमारे मताहत से गल्ती हो तो हमारी सहनशीलता की परीक्षा होती है, क्योंकि वह गरीब है, कमज़ोर है तो उसकी ग़ल्ती पर ताड़ना हम अपना अधिकार समझते हैं। क्या होगा यदि कुछ टूट जाए, या ख़राब हो जाए, साल भर में शायद 1000 – 2000 का नुकसान हो सकता है, शायद हम खुद काम करें तो इससे भी ज़्यादा तोड़ फोड़ कर दें, जब हम अपनों पर इतना खर्च करते हैं, अपने बच्चों पर इतना खर्च करते हैं, तो क्या यह थोड़ा सा खर्चा हम बर्दाश्त नहीं कर सकते? हां, उन्हें सावधान रहने के लिए प्यार से कहा जा सकता है, फिर वह अपनी ग़ल्ती छुपाएंगे भी नहीं।

वेतन समय पर न देना :- कई घरों में वेतन समय पर नहीं देते या थोड़ा देते हैं ताकि वह भाग न जाएं, यह अन्याय है। उस गरीब का परिवार उस वेतन पर पलता है। मैं जब भी किसी को काम के लिए रखती हूँ तो यह कह देती हूँ कि आपको वेतन समय पर मिलेगा परन्तु यदि आप किसी मजबूरी में काम छोड़ना चाहे तो हमें 1 महीना पहले बता दें। हमारे एक ड्राईवर ने अपनी गाड़ी ले ली, ऊबर चलाने लगा, परन्तु जब तक हमें और ड्राईवर नहीं मिला, उसने काम नहीं छोड़ा, उसका नतीजा है कि अब तक उसके साथ बहुत अच्छा सम्बन्ध है, ज़रूरत पड़ने पर वह हमारी सहायता भी ले लेता है। कई मताहत चाहकर भी 2 – 3 महीने अपने घर जाने

का इन्तज़ार करते हैं क्योंकि मालिक उन्हें वेतन नहीं देते।

स्वार्थ किसी भी रिश्ते का कड़वाहट से भर देता है। चाहे मालिक हो या मताहत। मताहत कोई घरेलू हो या बड़ी संस्था में, उसे भी ईमानदारी, वफादारी, कर्तव्य - परायणता से अपने कर्तव्यों का पालन करना आवश्यक है। अपने स्वामी का सम्मान करना, उसको निर्वाचित करने के लिए शुक्रगुज़ार होना आवश्यक है। अपने मालिक के सामने यदि काम करते हैं, तो उसकी गैर हाज़री में और भी ज़िम्मेवारी से काम करना चाहिए। कामचोर वर्कर अपनी भी हानि करता है और संस्था की भी।

मैं अपने अध्यापकों को हमेशा यह कहती थी कि तुम चाहते हो तुम्हारे बच्चों को अच्छे अध्यापक मिलें, उन्हें मेहनत से पढ़ाएं, तो जो बच्चे आप पढ़ा रहे हो, उनके माता पिता भी आपसे यही उम्मीद रखते हैं। यह बात अध्यापकों पर असर करती थी। दफ्तरों में जो कलर्क पब्लिक को बार 2 एक 2 काम के लिए चक्कर लगवाते हैं, वह उनकी जगह अपने को रखकर देखें कि पब्लिक किस कष्ट में से गुजरती है।

परम पूजनीय भगवान का व्यवहार अपने मताहतों के साथ एक आदर्श था। वह जहां सेवाकारियों को धन्यवाद देते थे, वहां अच्छा काम करने वालों की पूरी सराहना करते थे, उनको सम्मान देते थे, उन्हें उपहार देते थे।

पूजनीय भगवान के अधीन एक माली काम करता था, जो बहुत मेहनत से पौधों को लगाता, उनकी सेवा करता। पूजनीय भगवान उसके काम की सराहना ही नहीं करते थे, उसे सम्मान भी देते थे। एक दिन उन्होंने माली को बुलाया, तसले में गर्म पानी डलवाया और स्वयं अपने पवित्र हाथों से उसके पैर धोए, उसका गुणगान किया, उसे तोहफा दिया। उसके प्रति कृतज्ञता का प्रकाश किया। माली को उनके देव भावों ने ऐसा करने के लिए कैसे मनाया होगा, उसका अनुमान हम नहीं लगा सकते।

ऐसे गुरू के हम शिष्य हैं। उस दर्जे तक तो मनुष्यात्मा की पहुँच नहीं हो सकती, परन्तु हम अपनी 2 योग्यता के अनुसार अच्छे स्वामी वा अच्छे मताहत बनने का यत्न करें।

सुरजीत बराड़

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : - श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

हमारी बिरादरी यही है।

पिछले दिनों कुछ धर्म सम्बन्धी हमारे यहाँ पधारे, जिनके आने से हमारे घर की रौनक बढ़ गई और श्रीमान जी को इन्तहा खुशी मिली। उसमें गौतम जी भी शामिल थे, उन्होंने जाकर अपने भावों का इस प्रकार से प्रकाश किया :-

मेरे विशेष श्रद्धा और सम्मान के योग्य श्रीमान जी

सत्य देव की जय,

12.4.2023 को धर्म सम्बन्धियों के साथ आपके घर आने का मुझे सौभाग्य मिला, मुझे आपके और अन्य धर्म सम्बन्धियों के दर्शन करके ऐसा लग रहा था कि मैं किसी तीर्थ पर आया हूँ। मुझे महसूस हो रहा था कि धर्म सम्बन्धियों की वर्तमानता से वातावरण में उच्च प्रभाव पैदा हो गए थे कि जिसका असर काफी समय तक मुझ पर होता रहा।

मैं अपने रिश्तेदारों के यहाँ बहुत कम जाता हूँ। मुझे देव समाज के लोग ही अपने रिश्तेदार लगते हैं ओर मैं उन्हें सच्चा सम्बन्धी अनुभव करता हूँ। आपके पास बैठकर मुझे काफी सकून मिलता रहा। मैं आपकी सेहत के लिए शुभ कामना करता हूँ। आप सब धर्म सम्बन्धियों का आर्शीवाद मुझे मिलता रह सके ऐसी कामना करता हूँ।

गौतम जी आपके भावों के लिए बहुत 2 धन्यवाद। आप सब को मिलकर मुझे भी बहुत खुशी मिली है। मेरा आर्शीवाद सदा आपके साथ है। सचमुच यही हमारी बिरादरी है।

-बलदेव सिंह

--0--

एक और धर्म सम्बन्धी गोपाल जी ने माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी के लेखों की जो किताब छपनी है, उसके कुछ लेख पढ़े और अपने भाव इस तरह से व्यक्त किए :-

विशेष सन्मान के योग्य आँटी जी,

चरण स्पर्श सहित सत्यदेव की जय।

आज मैं अपने दिल के उदगार प्रगट करना चाहता हूँ जबकि मुझे मेरे बहुत श्रद्धा के योग्य, बहुत सन्मान के योग्य, विशेष आदर और बहुत बड़े उपकारी बड़े श्रीमान जी की पुस्तक जो छपने की तैयारी में (उनके लिखे हुए लेख माला की) है उसे ज्यों ज्यों पढ़ रहा हूँ मेरा हृदय और भी उनके श्री चरणों में झुकने को मजबूर हो रहा है। हालाँकि अभी 5-6 लेख ही पढ़े हैं परन्तु इन्हें पढ़कर जहाँ विशेष प्रेरणाएं मिलने के कारण मेरा साधन शुरू हो जाता है और जहाँ श्रीमान जी की विद्वता गुरू के प्रति उनका झुकाव देवरूप के प्रति उनकी लग्न व कशिश, गुरू मिशन के प्रति उनका दर्द, आन्तरिक तड़प, गुरू मिशन में फैल रही व "फैली हुई महा मिथ्या व सेवकों-साधकों आदि में अपने प्रति अबोधता व मिथ्यापन का दर्द यह सब सामने आकर उनके प्रति चरणों में पड़े रहने का ही मन करता है कि काश हम कुछ जन ऐसे तैयार हो पाते कि जो श्रीमान जी के हृदय- अमृत से कुछ उनकी लग्न व तड़फ से कुछ प्राप्त कर पाते। माफ करना मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि जिस प्रकार अनेक बड़े-बड़े महापुरुषों के दर्द को कोई आम जन समझ नहीं पाया, जैसे गुरू महाराज के समय में भी उन्हें समझने में मुनष्य वर्ग खाली रह गया उसी तरह बड़े श्रीमान जी भी अपनी लग्न, संग्राम व तड़फ से कुछ खास हृदय वाले बन गए परन्तु अफसोस सदा की तरह हम अब भी उन्हें जान-समझ नहीं

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD/0077/2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पाए।

विशेष तौर पर मुझे अपने ऊपर बहुत फटकार पड़ती है। जहाँ एक तरफ मैं यह कहने के लिए मजबूर हूँ कि मैं धन्य-धन्य हूँ कि मुझे इनके जैसा मार्गदर्शक, प्रेरणादायक व गुरू मिला। मैं इन्हें अपना गुरू कहने में, महसूस करने में अपार तृप्ति महसूस करता हूँ (चाहे यह मेरी गुस्ताखी समझे) क्योंकि मेरे ईष्ट भगवान देवात्मा को मैने जितनी मात्रा व जिस रूप में समझा है वह भी इन्हीं की देन है, अगर भगवान देवात्मा को भी कोई और समझाता तो मौजूदा हालात के अनुसार यह सम्भव था कि उसमें भी मिथ्या और कपटता होती।

अंत में मैं फिर यही कहूँगा कि मुझे इनकी ईच्छा और तड़प के अनुसार समय पर सही न चल पाने से मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ जिसकी माफी नहीं हो सकती।

– अति तुच्छ गोपाल कृष्ण

सावधान रहें

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने परलोक के सम्बन्ध में नेचर के अटल नियमों पर आधारित सत्य है और परलोक और परलोकवासी भी पूर्णत: सत्य शिक्षा दी है, परन्तु विशेष मीडियम के बिना जो करोड़ों में एक होगा परलोकवासी हमें कुछ नहीं बता सकते। पहले एक जन ने यह मिथ्या विश्वास फैलाया था, जिसको एक और जन ने भ्रम और मिथ्या कहा था, अब उसी जन को परलोक से इल्हाम हो रहा है कि परलोकवासी उन्हें जब उनकी कोई इच्छा पूरी न हो तो सन्देश देते हैं कि उनके प्रति खूब निन्दा फैलाओ, जिन्हें वह उपकारी कहते नहीं थकते थे। अपने अन्दर के घृणा भाव को निकालने के लिए परलोकवासियों का सहारा लिया जा रहा है। जबकि परम पूजनीय भगवान को बहुत प्रयत्न और खोज के बाद एक लड़की मीडियम मिली थी। कोई उच्च लोकवासी अपने उपकारी की निन्दा करने का सन्देश कभी कभी नहीं दे सकता। इसलिए ऐसे झूठे सन्देशों से सावधान रहें।

– सेक्रेटरी और जॉइंट सेक्रेटरी देव समाज (G)

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts